# कुण्डली-मिलान

**- अभिमन्यु**

यहां मैं पांच सुखमय वैवाहिक जीवन के उदाहरण कुण्डली मिलान के माध्यम से पेश कर रहा हूं। कुंडली मिलान के सूत्र इस प्रकार हैं:-

(1) पारम्परिक मिलान में अष्टकूट मिलान

(2) व्यक्तिगत विश्लेषण

(3) राशि तुल्य नवांश

(4) भाव मिलान

(5) दशा

(6) नकारात्मक पक्ष और सकारात्मक पक्ष का तुलनात्मक अध्ययन।

यदि सकारात्मक पक्ष अधिक बली हो तो सुखमय वैवाहिक जीवन की संभावना होती है।

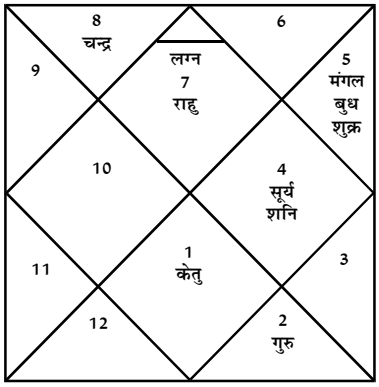


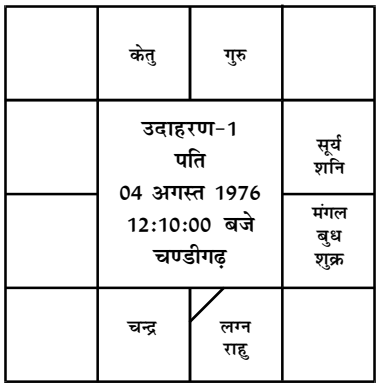


| लग्न | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| $10^0$ 38' | $18^0$ 28' | $06^0$ 14' | $23^0$ 50' | $07^0$ 26' | $04^0$ 19' | $01^0$ 26' | $13^0$ 45' | $14^0$ 15' |
| कारक | आत्म | अमात्य | भ्रातृ | मातृ | पुत्र | ज्ञाति | दारा | |
| | मंगल | सूर्य | शनि | बुध | चन्द्र | गुरु | शुक्र | |

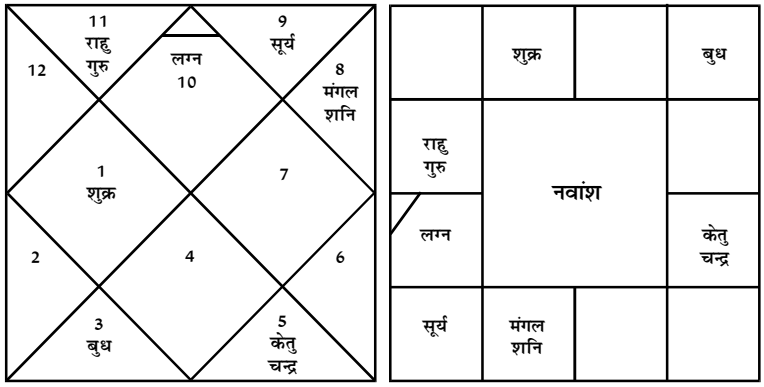


**उदाहरण-1**

**( 1 ) पारंपरिक मिलान**

इसमें अष्टकूट मिलान को देखें तो नाड़ी दोष है, गुण मिलान भी कम है (36 में से 18 गुण मिलते हैं) तथा नव-पंचम दोष भी है। लेकिन सकारात्मक पक्ष ज्यादा होने से सुखमय वैवाहिक जीवन है।

**( 2 ) व्यक्तिगत विश्लेषण**

(क) पुरुष कुंडली में सप्तमस्थ केतु शनि की दृष्टि है।

- स्त्री की कुंडली के सप्तम भाव पर किसी ग्रह का प्रभाव नहीं है।

(ख) पुरुष कुंडली का सप्तमेश मंगल लाभ भाव में दो शुभ ग्रह बुध और शुक्र के साथ स्थित है।

- स्त्री की कुंडली का सप्तमेश बुध लाभ भाव में शुक्र के साथ स्थित है। शनि और मंगल से दृष्ट है।

(ग) दोनों कुंडलियों में विवाह का कारक शुक्र लाभ भाव में शुभ स्थित है।

(घ) शुक्र से सप्तम भाव की स्थिति दोनों कुंडलियों में संतुलित है।

व्यक्तिगत विश्लेषण में पुरुष कुंडली का सप्तम भाव पीड़ित है। लेकिन सप्तमेश, कारक शुक्र और शुक्र से सप्तम भाव की स्थिति शुभ अवस्था में होने से व्यक्तिगत विश्लेषण ठीक है।

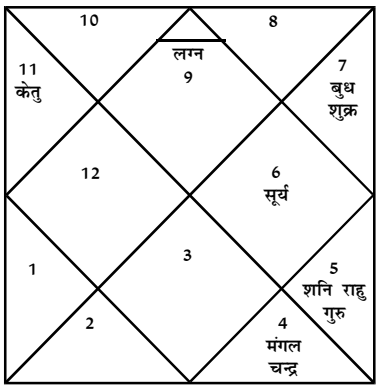

| लग्न | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| $04^0\,47'$ | $26^0\,43'$ | $11^0\,55'$ | $17^0\,40'$ | $16^0\,43'$ | $09^0\,12'$ | $09^0\,58'$ | $27^0\,47'$ | $14^0\,08'$ |
| कारक | आत्म | अमात्य | भ्रातृ | मातृ | पुत्र | ज्ञाति | दारा | |
| | शनि | सूर्य | मंगल | बुध | चन्द्र | शुक्र | गुरु | |

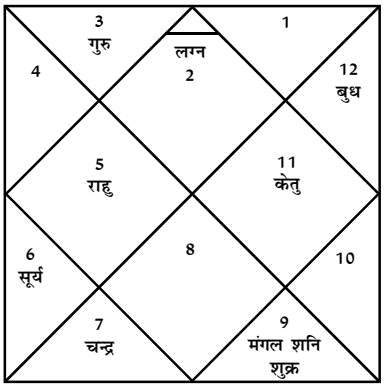


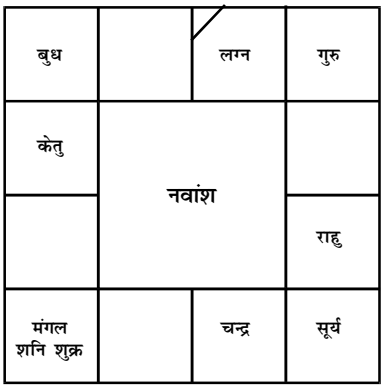


## (3) राशि तुल्य नवांश (नवांश कुंडली से)

(क) पुरुष का राशि तुल्य नवांश तुला है। तुला राशि गुरू से दृष्ट है। तुला राशि से सप्तम भाव में शुक्र दुष्प्रभावरहित है।

स्त्री का राशि तुल्य नवांश धनु है। धनु से सप्तम भाव में गुरु स्थित है। धनु राशि पर पापी मंगल और शनि के साथ शुभ गुरु और शुक्र का मिश्रित प्रभाव है।

दोनों के राशि तुल्य नवांश का लग्नेश सप्तमस्थ होकर अपने भाव को दृष्टि दे रहे हैं जो राशि तुल्य नवांश के लग्न और सप्तम भाव दोनों को बली

बनाता है। दोनों कुंडलियों के राशि तुल्य नवांश अक्ष बृहस्पति और शुक्र के शुभ प्रभाव में है। अतः राशि तुल्य नवांश की स्थिति शुभ है।

(ख) यदि नवांश का केन्द्र पीड़ित हो तो वैवाहिक जीवन में समस्या हो सकती है। पुरुष के नवांश कुंडली के केन्द्र में शुभ ग्रह शुक्र दुष्प्रभावरहित स्थित है।

लेकिन स्त्री के नवांश कुंडली के केन्द्र में केवल राहु-केतु स्थित है। अतः स्थिति शुभ नहीं है तो ज्यादा पीड़ित भी नहीं है।

(ग) पुरुष की जन्मकुंडली का सप्तमेश मंगल स्व-नवांश में शनि के साथ स्थित है। कारक शुक्र मंगल के नवांश में है, लेकिन पीड़ित नहीं है।

स्त्री की जन्मकुंडली का सप्तमेश बुध गुरु के नवांश में नीच का है तथा सूर्य और मंगल से दृष्ट है। यह कुंडली का नकारात्मक पक्ष है लेकिन कारक शुक्र को गुरु के नवांश में शनि और मंगल के साथ होने के बावजूद गुरु की शुभ दृष्टि सुरक्षा प्रदान कर रही है।

इस प्रकार से, नवांश विश्लेषण में नकारात्मक से सकारात्मक पक्ष अधिक हैं। अतः नवांश सही है।

**(4) भाव मिलान**

(क) पुरुष की जन्मकुंडली का सप्तम भाव केतु और शनि से पीड़ित है। लेकिन स्त्री की जन्मकुंडली का सप्तम भाव पीड़ित नहीं है।

(ख) स्त्री की जन्मकुंडली के अष्टम भाव में मंगल स्थित है। अष्टम मंगल दोष का परिहार नहीं है।

- दोनों कुंडलियों में भाव मिलान नहीं है। लेकिन दोनों कुंडलियों में दशम भाव में दिग्बली सूर्य है और दोनों के लाभ भाव में बुध और शुक्र की स्थिति है जो दोनों को शादी के बाद कर्म से लाभ को दर्शा रही है।

(ग) किसी एक कुंडली के शुक्र, चन्द्रमा या लग्न की राशि दूसरे की कुंडली के 1/7 अक्ष की राशि बन जाए तो मिलान अच्छा होता है। यहां स्त्री की जन्मकुंडली के शुक्र की राशि पुरूष की जन्मकुंडली का 1/7 का अक्ष बनी है जो वैवाहिक सुख के लिए शुभप्रद है।

**(5) दशा** - इनका विवाह मई 2006 में हुआ। पुरुष को बाद 16 जून,

2008 से केतु की दशा मिली। स्त्री का विवाह भी केतु की दशा में हुआ और 3 अगस्त, 2010 से शुक्र की महादशा शुरू हो चुकी है। विवाह के समय दशा अधिक सहायक नहीं थी।

**( 6 ) नकारात्मक पक्ष और सकारात्मक पक्ष का तुलनात्मक अध्ययन**

(क) नकारात्मक पक्ष - गुण 18 हैं। नाड़ी दोष है। नव पंचम दोष भी है। पुरुष का सप्तम भाव पीड़ित है और स्त्री की कुंडली में अष्टम मंगल है जिसका परिहार नहीं है।

(ख) सकारात्मक पक्ष - पुरुष और स्त्री दोनों की कुंडलियों का सप्तमेश और विवाह का कारक शुक्र भी लाभ भाव में स्थित है। दोनों की कुंडलियों में कारक शुक्र और सप्तमेश की लाभ भाव में युति भाव को बली बना रही है। स्त्री की कुंडली के नवम भाव में गुरू स्थित है। दोनों कुंडलियों का राशि तुल्य नवांश अक्ष शुभ अवस्था में है। स्त्री की कुंडली के शुक्र की राशि पुरुष कुंडली के लग्न की राशि है। दोनों के सप्तमेश का संबंध द्वादश भाव/द्वादशेश से है इसलिए विवाह के बाद दोनों विदेश में बस गए।

इस प्रकार से हमने देखा कि यदि कुंडली में व्यक्तिगत विश्लेषण में सकारात्मक पक्ष की अधिकता हो तो कुछ नकारात्मक बिन्दु विवाह में कभी-कभी समस्या तो दे सकते हैं लेकिन स्थायी तनाव नहीं। इसी कारण इनका वैवाहिक जीवन सुखमय है।

**उदाहरण-2**

**( 1 ) पारम्परिक मिलान में अष्टकूट मिलान** - अष्टकूट मिलान में गुण 15.5 हैं, नाड़ी दोष तथा भकूट दोष भी है।

**( 2 ) व्यक्तिगत विश्लेषण** - (क) पुरुष कुंडली का सप्तम भाव केतु और मंगल से पीड़ित है। स्त्री की कुंडली के सप्तम भाव पर तीन शुभ ग्रहों की दृष्टि है। (ख) पुरुष कुंडली का सप्तमेश और कारक शुक्र वक्री व अस्त है, मंगल और गुरू से दृष्ट है। स्त्री कुंडली का सप्तमेश गुरू केतु के साथ है तथा शनि से दृष्ट है। कारक शुक्र अस्त है।

व्यक्तिगत विश्लेषण में पुरुष कुंडली का सप्तम भाव पीड़ित है, सप्तमेश और कारक शुक्र वक्री और अस्त है। स्त्री की कुंडली का सप्तमेश गुरू भी

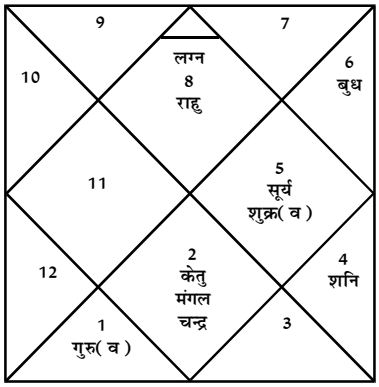


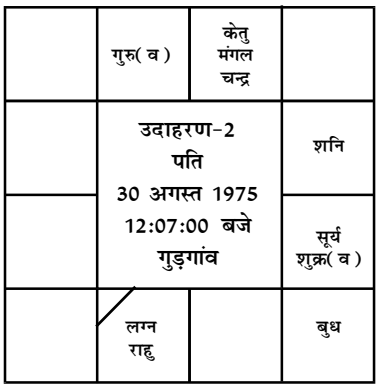


| लग्न | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| $02^0\,04'$ | $12^0\,45'$ | $16^0\,19'$ | $15^0\,37'$ | $05^0\,50'$ | $00^0\,47'$ | $08^0\,26'$ | $04^0\,37'$ | $01^0\,46'$ |
| कारक | आत्म | अमात्य | भ्रातृ | मातृ | पुत्र | ज्ञाति | दारा | |
| | चन्द्र | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | शनि | गुरु | |

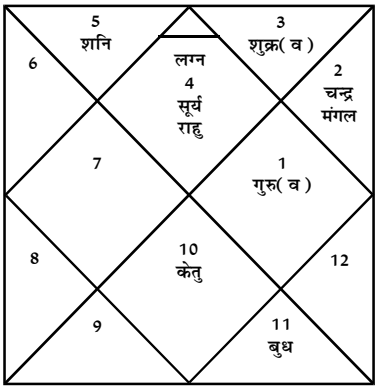


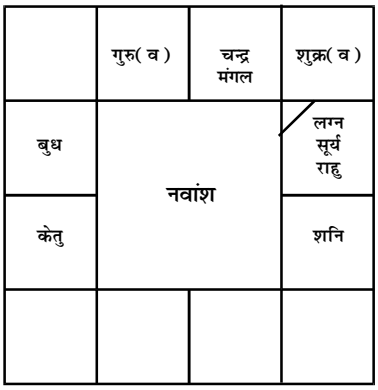


पीड़ित है और कारक शुक्र भी अस्त है। शुभ स्थिति नहीं है। लेकिन पुरुष कुंडली का सप्तमेश और कारक शुक्र बृहस्पति से दृष्ट है। स्त्री की कुंडली के सप्तम भाव पर तीन शुभ ग्रह बुध, शुक्र और गुरु की दृष्टि नकारात्मकता को कम कर रही है।

**( 3 ) राशि तुल्य नवांश ( नवांश कुंडली से )** - (क) पुरुष कुंडली का राशि तुल्य नवांश वृश्चिक राशि है, जिससे सप्तम भाव में उच्च का चन्द्रमा मंगल के साथ स्थित है और शुभकर्तरी में है, शनि से दृष्ट है।

स्त्री कुंडली का राशि तुल्य नवांश मिथुन राशि है। राशि तुल्य नवांश लग्न

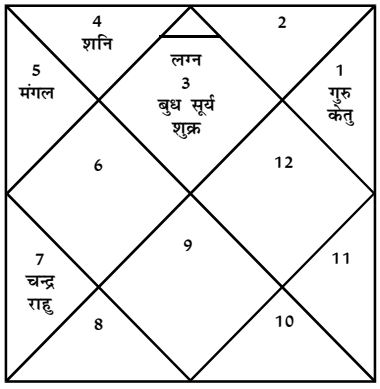

| लग्न | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| $19^0\,53'$ | $20^0\,31'$ | $07^0\,10'$ | $05^0\,52'$ | $09^0\,16'$ | $29^0\,31'$ | $25^0\,25'$ | $10^0\,00'$ | $16^0\,57'$ |
| कारक | आत्म | अमात्य | भ्रातृ | मातृ | पुत्र | ज्ञाति | दारा | |
| | गुरु | शुक्र | सूर्य | शनि | बुध | चन्द्र | मंगल | |

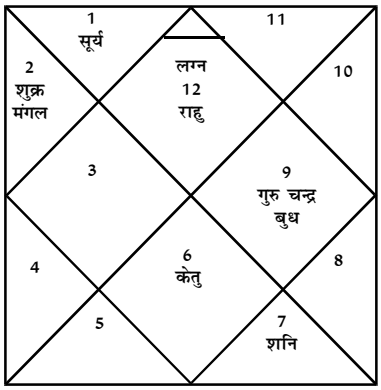


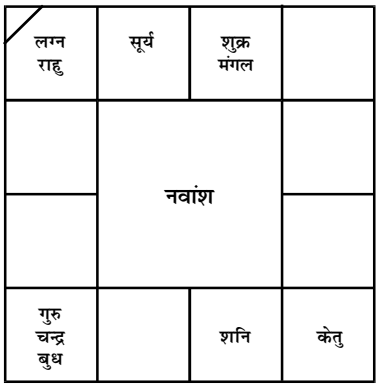


से सप्तम भाव में स्वराशिस्थ गुरु चन्द्रमा और बुध के साथ स्थित है। तीनों पर शनि और मंगल की दृष्टि भी है। इस तरह से राशि तुल्य नवांश शुभ और अशुभ दोनों प्रभाव में है।

(ख) पुरुष की नवांश कुंडली के केन्द्र में दो पाप ग्रह और एक शुभ ग्रह बृहस्पति स्थित है, लेकिन स्त्री की नवांश कुंडली के केन्द्र में तीन शुभ ग्रह स्थित हैं।

(ग) पुरुष कुंडली का सप्तमेश और कारक शुक्र मित्र बुध के नवांश में है। स्त्री कुंडली का सप्तमेश गुरू और कारक शुक्र स्व-नवांश में है। दोनों

के सप्तमेश और कारक शुक्र की स्थिति नवांश में बेहतर है।

**( 4 ) भाव मिलान** - पुरुष कुंडली का सप्तम भाव पीड़ित है, लेकिन स्त्री कुंडली का सप्तम भाव ठीक है अर्थात् संतुलन बना हुआ है। लेकिन स्त्री कुंडली के सप्तम भाव से विपरीत भाव अर्थात् लग्न शुभ प्रभाव में है जो कि एक उत्तम भाव मिलान है।

**( 5 ) दशा** - विवाह के समय स्त्री की गुरू की महादशा चल रही थी और पुरुष को भी विवाह के तीन वर्ष बाद गुरू की महादशा मिली। जो कि एक शुभ संकेत है।

**( 6 ) नकारात्मक और सकारात्मक पक्ष का तुलनात्मक अध्ययन** -

(क) नकारात्मक पक्ष - गुण-15.5 है। नाड़ी दोष और भकूट दोष है। पुरुष कुंडली का सप्तम भाव पीड़ित है। सप्तमेश और कारक शुक्र वक्री तथा अस्त है। पुरुष मांगलिक है और स्त्री मांगलिक नहीं है।

इन नकारात्मक पहलुओं को देखते हुए लगता है कि दोनों का वैवाहिक जीवन अच्छा नहीं रहेगा। जबकि दोनों का विवाह 27 नवम्बर, 2002 को हुआ और दस वर्ष के बाद भी वे सुखी हैं तथा उन्हें दो पुत्ररत्नों का सुख प्राप्त है।

वर्तमान में जातक का चयन डिप्टी कमिश्नर ऑफ पुलिस के पद पर हुआ है। पहले यह बैंक में कार्यरत थे। आइए अब हम सकारात्मक पक्ष को भी देखते हैं।

(ख) सकारात्मक पक्ष - पुरुष कुंडली का सप्तमेश और कारक शुक्र गुरू से दृष्ट है। स्त्री कुंडली का सप्तम भाव भी गुरू से दृष्ट है। पुरुष कुंडली का सप्तम भाव पीड़ित है लेकिन स्त्री कुंडली का सप्तम से विपरीत अर्थात् लग्न शुभ प्रभाव में है। दोनों की राशि एक है। दोनों की कुंडली का सप्तमेश और कारक शुक्र नवांश में अच्छी स्थिति में है। पुरुष को विवाह के बाद गुरू की दशा मिली जबकि स्त्री की शादी के समय गुरू की दशा चल रही थी। स्त्री की कुंडली का 2/8 अक्ष भी ठीक है। पुरुष कुंडली के सप्तम भाव में मंगल है। पुरुष डिप्टी कमिश्नर ऑफ पुलिस के पद पर कार्यरत है। मंगल की उग्रता इनकी नौकरी में सहायक का काम करती है अर्थात् सकारात्मक दिशा देती है। सकारात्मक बिन्दु ज्यादा हैं इसलिए कम गुण मिलान, नाड़ी

दोष, भकूट दोष, मांगलिक दोष होने के बावजूद भी वैवाहिक जीवन सुखमय है।

**उदाहरण-3**

**( 1 ) पारम्परिक मिलान में अष्टकूट मिलान** - अष्टकूट मिलान में गुण 16 हैं और नाड़ी दोष भी विद्यमान है।

**( 2 ) व्यक्तिगत विश्लेषण** - पुरुष की कुंडली में सप्तम भाव पर किसी ग्रह का प्रभाव नहीं है। स्त्री की कुंडली का सप्तम भाव दो शुभ ग्रह बुध और शुक्र से दृष्ट है। दोनों के सप्तमेश पीड़ित हैं। पुरुष कुंडली में

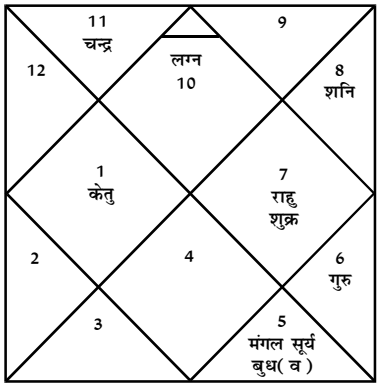


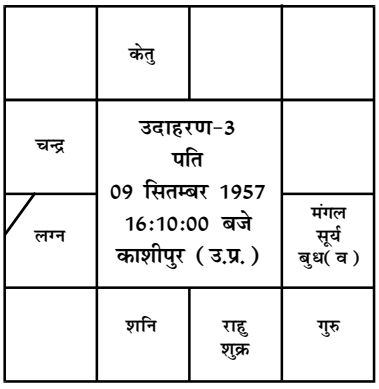


| लग्न | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| $10^0\,14'$ | $23^0\,12'$ | $25^0\,48'$ | $27^0\,14'$ | $24^0\,01'$ | $13^0\,15'$ | $01^0\,02'$ | $15^0\,03'$ | $18^0\,38'$ |
| कारक | आत्म | अमात्य | भ्रातृ | मातृ | पुत्र | ज्ञाति | दारा | |
| | मंगल | चन्द्र | बुध | सूर्य | शनि | गुरु | शुक्र | |

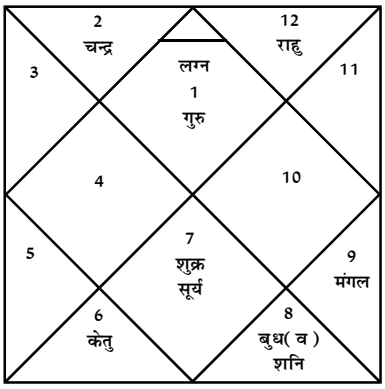


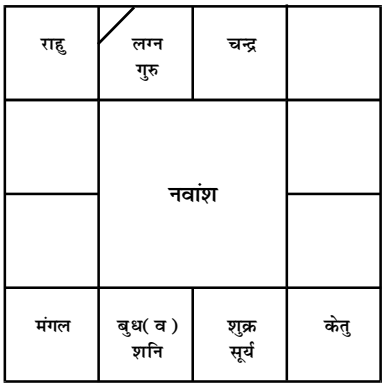

कारक शुक्र स्वराशि का होकर राहु-केतु अक्ष में है लेकिन अंशों में दूर है। स्त्री कुंडली में कारक शुक्र, बुध और मंगल के साथ लग्न में स्थित है।

इस तरह दोनों की जन्मकुंडलियों में सप्तम भाव शुभ अवस्था में है लेकिन दोनों का सप्तमेश पीड़ित है, इसे हम दोष-परिहार भी मान सकते हैं। कारक शुक्र भी मिश्रित प्रभाव में है। अतः दोनों का व्यक्तिगत विश्लेषण संतुलित अवस्था में है।

**( 3 ) राशि तुल्य नवांश ( नवांश कुंडली से )** - (क) पुरुष कुंडली का राशि तुल्य नवांश अक्ष ठीक है। स्त्री कुंडली का राशि तुल्य नवांश लग्न

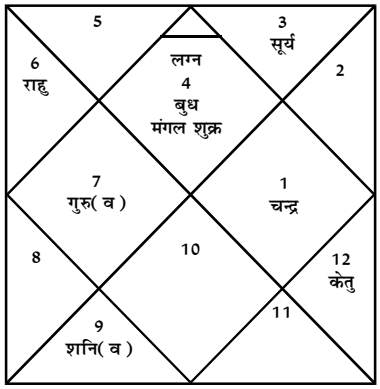


| | | | |
|---|---|---|---|
| केतु | चन्द्र | | सूर्य |
| | उदाहरण-3<br>पत्नी<br>30 जून 1959<br>07:47:00 बजे<br>सीतापुर ( उ.प्र. ) | | लग्न<br>बुध मंगल<br>शुक्र |
| | | | |
| शनि( व ) | | गुरु( व ) | राहु |

| लग्न | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| $16^0\,17'$ | $14^0\,16'$ | $08^0\,14'$ | $24^0\,11'$ | $08^0\,39'$ | $29^0\,26'$ | $29^0\,29'$ | $10^0\,11'$ | $15^0\,35'$ |
| कारक | आत्म | अमात्य | भ्रातृ | मातृ | पुत्र | ज्ञाति | दारा | |
| | शुक्र | गुरु | मंगल | सूर्य | शनि | बुध | चन्द्र | |

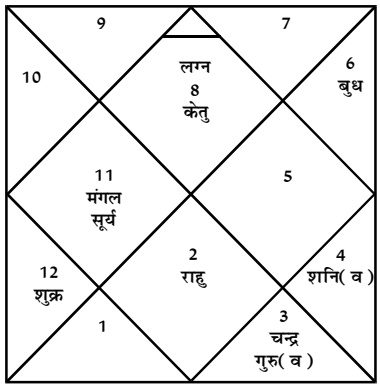


| | | | |
|---|---|---|---|
| शुक्र | | राहु | चन्द्र<br>गुरु( व ) |
| मंगल<br>सूर्य | नवांश | | शनि( व ) |
| | | | |
| | लग्न<br>केतु | | बुध |

कर्क है। कर्क राशि से सप्तम भाव अपने स्वामी सप्तमेश शनि से दृष्ट है। दोनों के राशि तुल्य नवांश सही हैं।

(ख) पुरुष की नवांश कुंडली के केन्द्र में दो शुभ ग्रह हैं। स्त्री की नवांश कुंडली के केन्द्र में तीन पाप ग्रह हैं।

(ग) पुरुष जन्मकुंडली का सप्तमेश चन्द्रमा नवांश में उच्च का है और कारक शुक्र स्वराशि का है। स्त्री की जन्मकुंडली का सप्तमेश शनि नवांश में किसी ग्रह के प्रभाव में नहीं है और कारक शुक्र उच्च का है।

इस तरह से, नवांश में राशि तुल्य नवांश की स्थिति अच्छी है।

**(4) भाव मिलान** - पुरुष कुंडली का अष्टम भाव पीड़ित है। स्त्री कुंडली के अष्टम भाव में पीड़ा नहीं है। समान भावों की पीड़ा नहीं है। पुरुष के अष्टम मंगली दोष का निवारण नहीं है। अत: भाव मिलान शुभ नहीं है।

(नोट - विवाह की तिथि उपलब्ध नहीं है अत: विवाहकाल की दशा का वर्णन नहीं किया जा सका है)

**(5) नकारात्मक और सकारात्मक पक्ष का तुलनात्मक अध्ययन-**

(क) नकारात्मक पक्ष - पुरुष की जन्मकुंडली का अष्टम भाव पीड़ित है। स्त्री कुंडली का सप्तमेश वक्री होकर षष्ठस्थ है। नाड़ी दोष है। गुण भी सामान्य से (16) कम हैं और भाव मिलान भी अनुपस्थित है।

(ख) सकारात्मक पक्ष - पुरुष की जन्मकुंडली के अष्टम भाव पीड़ित होने के बावजूद चूंकि स्त्री की जन्मकुंडली का लग्न शुभ प्रभाव में है जो स्त्री की आयु की रक्षा कर रहा है। स्त्री की कुंडली का सप्तम भाव शुभ प्रभाव में है और चन्द्रमा की राशि का अक्ष, पुरुष कुंडली के शुक्र की राशि का अक्ष बनने से शुक्र-चन्द्रमा का मिलान अच्छा है। स्त्री की कुंडली के लग्न में शुक्र और मंगल है, जो एक दूसरे के प्रति आकर्षण देता है यह दोनों के सप्तमेश पीड़ित होने के दोष को कम कर रहा है। पुरुष कुंडली का सप्तमेश नवांश में उच्च का है। दोनों की कुंडली में विवाह के कारक शुक्र की स्थिति नवांश में अच्छी है, एक में स्वराशि का तो दूसरे में उच्च का है। राशि तुल्य नवांश अक्ष दोनों का पीड़ित नहीं है। स्त्री कुंडली का 2/8 अक्ष भी संतुलित अवस्था में है।

सकारात्मक पक्ष अधिक बली है। इसलिए सुखी वैवाहिक जीवन है।

**उदाहरण-4**

**( 1 ) पारम्परिक मिलान में अष्टकूट मिलान** - अष्टकूट मिलान में 19 गुण हैं। नाड़ी दोष है।

**( 2 ) व्यक्तिगत विश्लेषण** - पुरुष की जन्मकुंडली का सप्तम भाव मंगल से दृष्ट है। स्त्री कुंडली के सप्तम भाव में वक्री मंगल स्थित है और लग्न से सप्तम भाव पर बृहस्पति, शनि, सूर्य और बुध की दृष्टि है। गुरु की शुभ दृष्टि सुरक्षात्मक है।

पुरुष की कुंडली के सप्तमेश पर किसी ग्रह का प्रभाव नहीं है। स्त्री

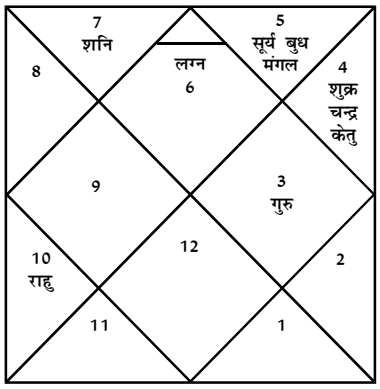

| लग्न | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| $20^0\,28'$ | $19^0\,02'$ | $13^0\,48'$ | $00^0\,41'$ | $16^0\,52'$ | $00^0\,45'$ | $13^0\,56'$ | $01^0\,22'$ | $09^0\,38'$ |
| कारक | आत्म | अमात्य | भ्रातृ | मातृ | पुत्र | ज्ञाति | दारा | |
| | सूर्य | बुध | शुक्र | चन्द्र | शनि | गुरु | मंगल | |

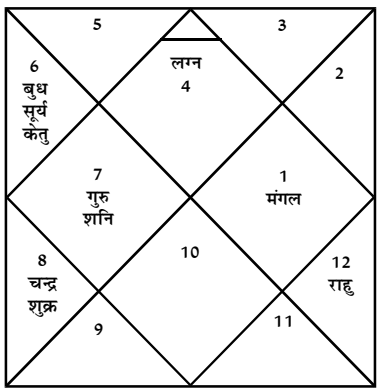


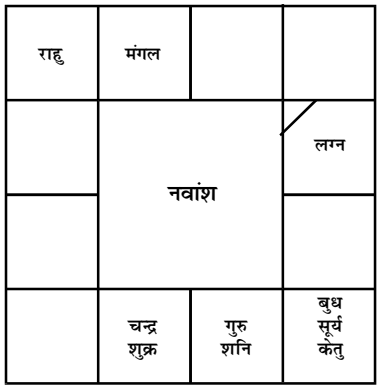

कुंडली का  सप्तमेश की अपने सप्तम भाव पर दृष्टि उसे बली बना रही है। सप्तमेश अस्त है लेकिन अंशात्मक निकटता नहीं है।

पुरुष कुंडली में कारक शुक्र लाभ भाव में केतु और चन्द्रमा के साथ है और शनि से दृष्ट है। केतु से शुक्र की अंशात्मक निकटता न होने से पाप प्रभाव नहीं है। व्यक्तिगत विश्लेषण में दोनों कुंडलियेां में शुभ और अशुभ मिश्रित प्रभाव है। स्थिति संतुलित है।

**( 3 ) राशि तुल्य नवांश ( नवांश कुंडली से )** – राशि तुल्य नवांश और नवांश के विश्लेषण में ज्यादा शुभता नहीं है।

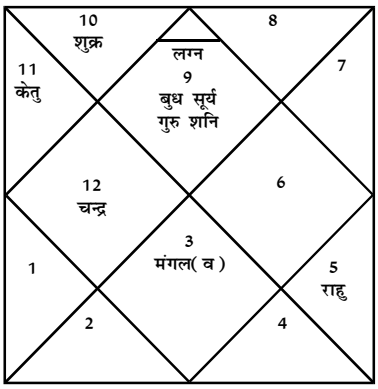


| | | |
|---|---|---|
| चन्द्र | | मंगल( व ) |
| केतु | उदाहरण-4<br>पत्नी<br>25 दिसम्बर 1960<br>07:00:00 बजे<br>खेकड़ा ( उ.प्र. ) | |
| शुक्र | | राहु |
| लग्न<br>बुध सूर्य<br>गुरु शनि | | |

| लग्न | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| $06^0\,14'$ | $09^0\,57'$ | $09^0\,28'$ | $17^0\,33'$ | $03^0\,10'$ | $19^0\,10'$ | $23^0\,58'$ | $25^0\,27'$ | $15^0\,23'$ |
| कारक | आत्म | अमात्य | भ्रातृ | मातृ | पुत्र | ज्ञाति | दारा | |
| | शनि | शुक्र | गुरु | मंगल | सूर्य | चन्द्र | बुध | |

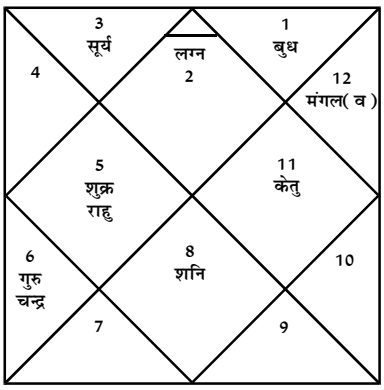


| | | | |
|---|---|---|---|
| मंगल( व ) | बुध | लग्न | सूर्य |
| केतु | नवांश | | |
| | | | शुक्र<br>राहु |
| | शनि | | गुरु<br>चन्द्र |

**( 4 ) भाव मिलान** – पुरुष कुंडली का द्वादश भाव पीड़ित है। स्त्री कुंडली के सप्तम भाव में मंगल है। समान पीड़ा नहीं है। भाव मिलान शुभ नहीं है।

**( 5 ) दशा** – इनका विवाह नवम्बर 1981 में हुआ था। पुरुष को विवाह के समय शुक्र की दशा मिली जो 2001 तक चली। स्त्री को शादी के समय बुध की दशा मिली थी जो 1988 तक चली। दोनों को शुभ ग्रह की दशा मिली।

**( 6 ) नकारात्मक और सकारात्मक पक्ष का तुलनात्मक अध्ययन** –

(क) नकारात्मक पक्ष – गुण 19 मिले हैं। नाड़ी दोष है। पुरुष कुंडली का बारहवां भाव पीड़ित है। स्त्री कुंडली में सप्तमंगली का निवारण नहीं है। सप्तमेश अस्त है।

(ख) सकारात्मक पक्ष . स्त्री कुंडली के सप्तम भाव पर दो शुभ ग्रह गुरु और बुध का प्रभाव है। स्त्री की कुंडली की चन्द्रराशि पुरुष कुंडली का 1/7 अक्ष बनी है। स्त्री कुंडली का 2/8 अक्ष शुभ अवस्था में है, कोई पीड़ा नहीं है। दोनों को विवाह के समय शुक्र व बुध की शुभ दशा मिली। सप्तमंगली का पति पुलिस वाला या सेना में कार्य करने वाला हो तो अच्छा रहता है। स्त्री कुंडली के सप्तम भाव में मंगल है और पुरुष एक आर्मी ऑफिसर के पद पर कार्यरत हैं इससे मंगल की उग्रता उन्हें अपने कार्यक्षेत्र में सदुपयोगी साबित हुई और नौकरी के सिलसिले में घर से थोड़े-थोड़े समय के लिए दूर भी रहे। पुरुष के कार्यक्षेत्र की प्रकृति मंगल के कारकत्व की तरह होने से, दोनों का वैवाहिक संबंध तीस वर्षों से सुखमय है।

**उदाहरण-5**

**( 1 ) पारम्परिक मिलान में अष्टकूट मिलान** – अष्टकूट मिलान में गुण 11.5 हैं तथा सूक्ष्म नाड़ी दोष है।

**( 2 ) व्यक्तिगत विश्लेषण** – पुरुष की जन्मकुंडली का सप्तम भाव दो शुभ ग्रह से दृष्ट है। स्त्री की जन्मकुंडली का सप्तम भाव गुरू से दृष्ट है। पुरुष कुंडली का सप्तमेश गुरू लग्न में स्थित होकर अपने भाव को देख रहा है। स्त्री कुंडली का सप्तमेश पीड़ित है। पुरुष कुंडली का कारक शुक्र लग्न

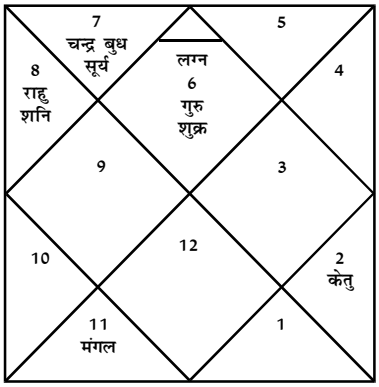


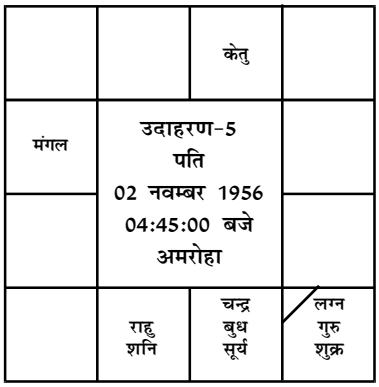


| लग्न | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| $22^0\,54'$ | $16^0\,15'$ | $07^0\,13'$ | $23^0\,03'$ | $09^0\,26'$ | $00^0\,46'$ | $08^0\,07'$ | $09^0\,06'$ | $05^0\,46'$ |
| कारक | आत्म | अमात्य | भ्रातृ | मातृ | पुत्र | ज्ञाति | दारा | |
| | मंगल | सूर्य | बुध | शनि | शुक्र | चन्द्र | गुरु | |

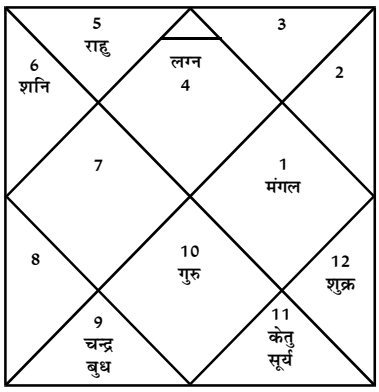


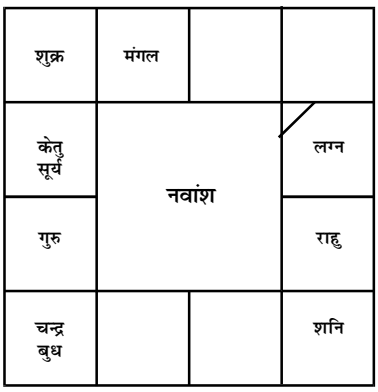


में नीच का है तथा मंगल से दृष्ट है। स्त्री कुंडली का कारक शुक्र नवम भाव में स्वराशिस्थ है। शुक्र अस्त है तथा दो शुभ और दो अशुभ ग्रहों के मिश्रित प्रभाव में है। व्यक्तिगत विश्लेषण में पुरुष कुंडली का सप्तम भाव और सप्तमेश बली है लेकिन स्त्री कुंडली का सप्तमेश और कारक शुक्र पीड़ित है। स्थिति संतुलित है।

**(3) राशि तुल्य नवांश (नवांश कुंडली से)** - (क) पुरुष कुंडली का राशि तुल्य नवांश कन्या है। कन्या से सप्तम में शुक्र उच्चस्थ है। स्त्री का राशि तुल्य नवांश कुम्भ राशि है जिससे सप्तम भाव पर बुध, गुरु और उच्च

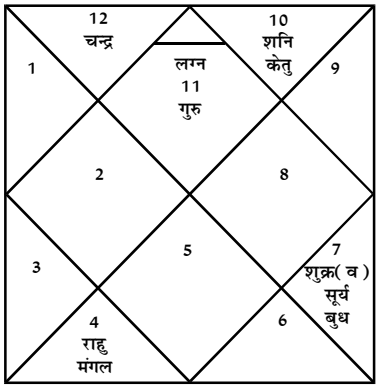


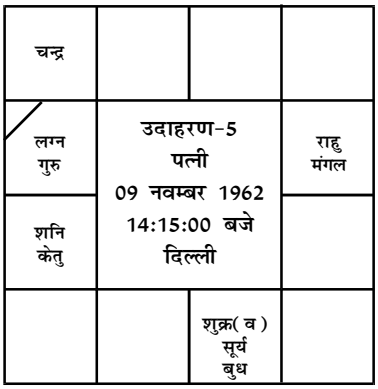


| लग्न | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| $17^0\,35'$ | $23^0\,08'$ | $17^0\,12'$ | $20^0\,14'$ | $13^0\,36'$ | $09^0\,41'$ | $28^0\,42'$ | $12^0\,12'$ | $09^0\,46'$ |
| कारक | आत्म | अमात्य | भ्रातृ | मातृ | पुत्र | ज्ञाति | दारा | |
| | शुक्र | सूर्य | मंगल | चन्द्र | बुध | शनि | गुरु | |

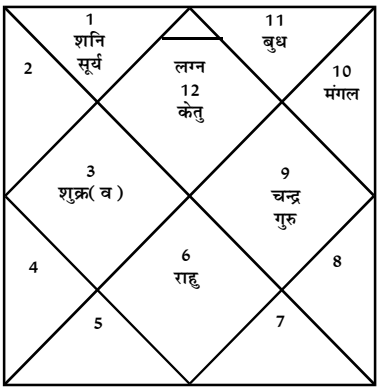


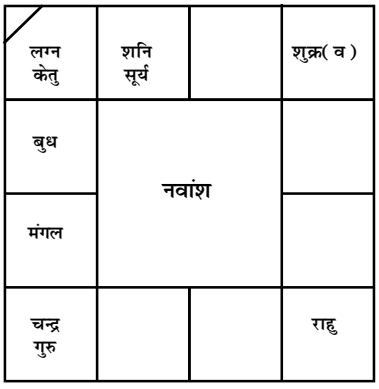


के मंगल की दृष्टि है।

(ख) पुरुष कुंडली का सप्तमेश नीच का है, लेकिन कारक शुक्र उच्च का है। स्त्री कुंडली का सप्तमेश सूर्य उच्च का है और कारक शुक्र मित्र बुध के नवांश में होकर दो शुभ ग्रह गुरू और चन्द्रमा से दृष्ट है। शनि से भी दृष्ट है।

**( 4 ) भाव मिलान** - पुरुष कुंडली का द्वादश भाव पीड़ित है। इसका परिहार नहीं है।

**( 5 ) दशा** - इनका विवाह 28 अक्तूबर, 1985 को हुआ था। शादी के

समय पुरुष की गुरू की दशा चल रही थी और 1986 से स्त्री को शुक्र की दशा मिली। दोनों को शुभ ग्रह की दशा मिली।

**( 6 ) नकारात्मक और सकारात्मक पक्ष का तुलनात्मक अध्ययन** -

(क) नकारात्मक पक्ष - गुण-11.5 है। सूक्ष्म नाड़ी दोष है। भाव मिलान नहीं है। पुरुष कुंडली में कारक शुक्र नीच का है। स्त्री कुंडली का सप्तमेश नीच का है तथा कारक शुक्र पीड़ित है।

(ख) सकारात्मक पक्ष - दोनों की कुंडलियों में सप्तम भाव पर शुभ ग्रह गुरु की लग्न से दृष्टि है। दोनों में सप्तमेश और कारक शुक्र की युति है। भावेश और कारक की युति भाव को बली बनाता है। स्त्री की कुंडली की चन्द्रराशि पुरुष की कुंडली का 1/7 अक्ष है। पुरुष की कुंडली में कारक शुक्र नीच का है, जो नवांश में उच्च का है। स्त्री कुंडली में सप्तमेश सूर्य नीच का है जो नवांश में उच्च का है, अतः परिवर्तन शुभता लिए हुए है। स्त्री की कुंडली के 2/8 अक्ष में पीड़ा नहीं है। राशि तुल्य नवांश अक्ष शुभ है। स्त्री कुंडली का द्वादश भाव पीड़ित है। पुरुष का नौकरी के सिलसिले में अक्सर घर से बाहर आते-जाते रहना भी एक सकारात्मक बली कारण है।

पारंपरिक मिलान में कमी होने के बावजूद और व्यक्तिगत विश्लेषण शुभ है जिससे दोनों पच्चीस वर्षों से एकसाथ सुख से रह रहे हैं।

*****